भारत सरकार
वित्त मंत्रालय
आर्थिक कार्य विभाग

राज्य सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या 878
(जिसका उत्तर मंगलवार, 3 दिसंबर, 2024/12 अग्रहायण, 1946 (शक) को दिया जाना है)

रुपये का अवमूल्यन करने वाले कारक

878. श्रीमती फूलो देवी नेतम:

क्या **वित्त मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार ने भारतीय रुपये में हाल में आई गिरावट के लिए उत्तरदायी कारकों का विश्लेषण किया है और यदि हां, तो इस विश्लेषण के मुख्य निष्कर्ष क्या हैं;

(ख) मुद्रा अवमूल्यन के बीच स्थिर विदेशी निवेश को आकर्षित करने के लिए सरकार द्वारा क्या कदम उठाए जा रहे हैं;

(ग) क्या सरकार ने मुद्रास्फीति, आयात लागत और भारतीय उपभोक्ताओं की क्रय शक्ति पर रुपये के अवमूल्यन के प्रभाव का मूल्यांकन किया है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और

(घ) सरकार रुपये को स्थिर करने और अर्थव्यवस्था तथा उपभोक्ताओं पर पड़ने वाले किसी प्रतिकूल प्रभाव को कम करने के लिए क्या कदम उठा रही है?

उत्तर
वित्त राज्य मंत्री (श्री पंकज चौधरी)

(क) भारतीय रुपये (आईएनआर) का मूल्य बाजार द्वारा निर्धारित होता है, जिसका कोई लक्ष्य या विशिष्ट स्तर या बैंड नहीं होता। डॉलर सूचकांक में उतार-चढ़ाव, पूंजी अंतर्वाह में रुझान, ब्याज दरों का स्तर, कच्चे तेल की कीमतों में उतार-चढ़ाव, चालू खाता घाटा आदि जैसे विभिन्न घरेलू और वैश्विक कारक भारतीय रुपये (आईएनआर) की विनिमय दर को प्रभावित करते हैं।

वर्तमान कैलेंडर वर्ष (सीवाई) 2024 के दौरान, 19 नवंबर, 2024 तक अमेरिकी डॉलर (यूएसडी) की तुलना में भारतीय रुपये (आईएनआर) में 1.4% की गिरावट आई है। भारतीय रुपये (आईएनआर) के इस अवमूल्यन का प्रमुख्य कारण अमेरिकी डॉलर की ब्रॉड बेस्ड स्ट्रेंथ रही है। कैलेंडर वर्ष 2024 के दौरान, दिनांक 19 नवंबर, 2024 तक डॉलर सूचकांक में लगभग 4.8% की वृद्धि हुई है। हाल ही में, डॉलर सूचकांक दिनांक 22 नवंबर, 2024 को 108.07 के अंक पर पहुंच गया, जो एक वर्ष से अधिक समय के लिए इसका अधिकतम स्तर है, जिससे उभरते बाज़ारों की मुद्राओं पर दबाव पड़ा है। इसके अतिरिक्त, मध्य पूर्व में भू-राजनीतिक तनाव और अमेरिकी चुनाव परिणामों को लेकर अनिश्चितता ने भी मुश्किलें बढ़ाई हैं।

इसके बावजूद, भारतीय रुपया सबसे बेहतर निष्पादन करने वाली एशियाई मुद्राओं में से एक बना हुआ है। इसकी तुलना में, जापानी येन और दक्षिण कोरियाई वॉन जैसी प्रमुख एशियाई मुद्राओं में 19 नवंबर, 2024 तक क्रमशः 8.8% और 7.5% की गिरावट आई है। उल्लेखनीय है कि ब्रिटिश पाउंड (जीबीपी) के अलावा सभी जी10 मुद्राओं में कैलेंडर वर्ष 2024 के दौरान 4.0% से अधिक की गिरावट आई है।

भारतीय रुपये की सापेक्ष स्थिरता भारत की सुदृढ़ और समुत्थानशील आर्थिक फंडामेंटल, व्यापक आर्थिक और वित्तीय स्थिरता का प्रमाण है।

(ख) विदेशी निवेश का अंतर्वाह निजी व्यावसायिक निर्णय पर आधारित होता है, जो बाजार के आकार, बृहद-आर्थिक स्थिरता, निवेश वातावरण, भू-राजनीतिक कारकों और अन्य वैश्विक आर्थिक कारकों जैसे विभिन्न बाह्य कारकों पर निर्भर करता है।
प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने निवेशक अनुकूल एफडीआई नीति लागू की है, जिसमें एक छोटी सी सूची को छोड़कर अधिकांश क्षेत्र ऑटोमेटिक रूट के तहत 100% एफडीआई के लिए खुले हैं। इसके अतिरिक्त, एफडीआई से संबंधित नीति की निरंतर रूप से समीक्षा की जाती है, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि भारत एक आकर्षक और निवेशक अनुकूल निवेश केन्द्र बना रहे।
इसके अतिरिक्त, केंद्रीय बजट 2024-25 में एफडीआई के लिए नियमों और विनियमनों को सरल बनाने और विदेशी कंपनियों के लिए कॉर्पोरेट कर की दर में कमी करने की घोषणा की गई है।
इसके अतिरिक्त, भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) सरकार के परामर्श से ऋण में विदेशी निवेश हेतु अनुकूल वातावरण प्रदान करने संबंधी उपाय कर रहा है, जिसमें निवेश से संबंधित संभावनों का विस्तार करने और इसके प्रचलनात्मक लचीलापन प्रदान करने के उपाय शामिल हैं।

(ग) मुद्रा के अवमूल्यन से निर्यात में प्रतिस्पर्धा बढ़ने की संभावना है, जिसका अर्थव्यवस्था पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। दूसरी ओर, अवमूल्यन से आयातित वस्तुओं की कीमतें बढ़ सकती हैं। तथापि, घरेलू कीमतों पर विनिमय दर मूल्यह्रास का समग्र प्रभाव अंतरराष्ट्रीय कमोडिटी कीमतों के घरेलू बाजार को प्रभावित करने की सीमा पर निर्भर करता है। इसके अतिरिक्त, अर्थव्यवस्था में आयात भी अंतरराष्ट्रीय बाजार में वस्तुओं की मांग और आपूर्ति, व्यापार योग्य वस्तुओं की प्रकृति (अर्थात आवश्यक या सुख-सुविधा की वस्तुएं), माल ढुलाई लागत, पूरक वस्तुओं की उपलब्धता आदि सहित विभिन्न कारकों पर निर्भर करता है। इस प्रकार, आयात लागत और उसके परिणामस्वरूप घरेलू मुद्रास्फीति तथा उपभोक्ता की क्रय शक्ति पर विनिमय दर में उतार-चढ़ाव के प्रभाव को अलग नहीं किया जा सकता है।

(घ) भारतीय रिजर्व बैंक दुनिया भर में होने वाले उन प्रमुख घटनाक्रमों पर नज़र रखता है जिनका यूएसडी-आईएनआर विनिमय दर पर असर पड़ सकता है। इसमें अन्य बातों के साथ-साथ, प्रमुख केंद्रीय बैंकों की मौद्रिक नीति संबंधी कार्रवाई, दुनिया भर में जारी किए जाने वाले प्रमुख आर्थिक आंकड़े और उनके प्रभाव, ओपेक+ बैठक के निर्णय, भू-राजनीतिक घटनाओं पर नज़र रखना और उनका विश्लेषण करना, जी-10 और ईएमई मुद्राओं में दैनिक उतार-चढ़ाव आदि शामिल हैं। भारतीय रिजर्व बैंक विदेशी मुद्रा बाज़ार को उसके व्यवस्थित कामकाज और विकास को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से नियंत्रित करता है और भारतीय रुपये में होने वाले अनावश्यक उतार-चढ़ाव को रोकने के लिए भी हस्तक्षेप करता है।

* * * * *